

शिवराजविजयस्य रचयिता कः ?

शिवराजविजयस्य रचयिता 'अम्बिकादत्तव्यासः।

[अति लघु उत्तरम् : श्रीअम्बिकादत्तव्यासः]

श्रीअम्बिकादत्तव्यासस्य पूर्वजः कुत्रावसन् ?

राजस्थान प्रदेशस्य जयपुरमण्डलस्य धूलानामके ग्रामे।

अम्बिकादत्तव्यासस्य पितुर्नाम किम् ?

अम्बिकादत्तव्यासस्य पितुर्नाम पण्डितः दुर्गादत्तः।

[अति लघु उत्तरम् : पण्डितः दुर्गादत्तः]

अम्बिकादत्तस्य जन्मतिथिः का विद्यते ?

अम्बिकादत्तव्यासस्य जन्मतिथिः १९१५ वैक्रमाब्दस्य चैत्रशुक्लाष्टमी।

[अति लघु उत्तरम् : १९१५ वैक्रमाब्दस्य चैत्रशुक्लाष्टमी]

अम्बिकादत्तव्यासः कुत्र शिक्षामग्रहीत् ?

अम्बिकादत्तव्यासः काश्याम् शिक्षाग्रहणकरोत्।

[अति लघु उत्तरम् : काश्याम्]

श्रीमदम्बिकादत्तव्यासः कदा आचार्यपरीक्षाम् उदतरत् [उत्तीर्णं हन] ?

श्रीमदम्बिकादत्तव्यासः १८०० ईशवीयाब्दे/ख्रीष्टाब्दे साहित्यचार्यस्य परीक्षाम् उत्तीर्णवान्।

[अति लघु उत्तरम् : १८८० ख्रीष्टाब्दे]

अम्बिकादत्तव्यासस्य मृत्यु कदा अभवत् ?

अम्बिकादत्तव्यासस्य मृत्युः १९०० ख्रीष्टाब्दे अभवत्।

[अति लघु उत्तरम् : १९०० ख्रीष्टाब्दे]

शिवराजविजयम् ऋते अम्बिकादत्तव्यासस्य अपरा रचना का ?

शिवराजविजयम् ऋते अम्बिकादत्तव्यासस्य अपरा रचना कथाकुसुम्। [अति लघु उत्तरम् : कथाकुसुम्]

शिवराजविजयः गद्यकाव्यः पद्यकाव्यं वा ?

शिवराजविजयः गद्यकाव्यम्।

[अति लघु उत्तरम् : गद्यकाव्यम्]

शिवराजविजयकाव्यं कस्याः श्रेण्याम् अन्तर्भवति?

शिवराजविजयः उपन्यासश्रेण्याम्। उपन्यासकोटयां वा अन्तर्भवति। [अति लघु उत्तरम् : उपन्यासश्रेण्याम्]

शिवराजविजयस्य प्रकाशकालः कः?

शिवराजविजयस्य प्रकाशकालः १८९८ ख्रीष्टाब्दः। [अति लघु उत्तरम् : १८९८ ख्रीष्टाब्दः।]

शिवराजविजयस्य नायकः कः?

शिवराजविजयस्य नायकः शिववरः [शिवाजी]। [अति लघु उत्तरम् : शिववरः।]

शिवराजविजयस्य प्रतिनायकः कः?

शिवराजविजयस्य प्रतिनायकः औरङ्गजेवः। [अति लघु उत्तरम् : औरङ्गजेवः।]

शिवराजविजयः कस्य वर्णनात् उपक्रान्तः [आरब्धः] भवति?

शिवराजविजयः प्रातःकालस्य वर्णनात् उपक्रान्तः भवति। [अ. ल. उ. : प्रातःकालस्य वर्णनात्]

'विष्णोर्माया भगवती' इत्यादि वाक्यं कुत उद्धृतम्?

'विष्णोर्माया भगवती' इत्यादि वाक्यं श्रीमद्भागवतमहापुराणस्य दशमस्कन्धात् उद्धृतः। [अ. ल. उ. : भागवतपुराणस्य दशमस्कन्धात्]

मरीचिमाली कस्य नाम विद्यते?

भगवतः सूर्यस्य नाम मरीचिमाली। [अ. ल. उ. : सूर्यस्य]

गौरवटुः श्यामवटुश्च कौ स्तः?

गुरुसेवनपटुब्रह्मचारिणौ।

सप्तवर्षीया वालिका का आस्ते?

सप्तवर्षीया वालिका कस्यचन ग्रामवासिनः ब्राह्मणस्य कन्या। [अ. ल. उ. : ब्राह्मणकन्या]

पर्वतस्य कन्दरे क आसीत्?

पर्वतकन्दरे कश्चन समाधिस्थः महामुनिः आसीत्। [अ. ल. उ. : कश्चन समाधिस्थः महामुनिः।]

শিবরাজ বিজয়ের প্রতি নায়ক কে?
শিবরাজবিজয়ের প্রতিনায়ক হলেন—ঔরঞ্জাজেব।

মারীচমালী কস্য নাম বিদ্যতে?

মারীচমালী সূর্যস্য নাম বিদ্যতে।

মারীচমালী কস্য নাম বিদ্যতে?

মারীচমালী সূর্যস্য নাম বিদ্যতে।

মারীচমালী কার নাম?

মারীচমালী সূর্যের নাম।

বটোঃ বাহিকঃ বর্ণনম্ আলোচ্যতাম্?

বটোঃ বাহিকঃ আকৃত্যা সুন্দরঃ বর্ণনগৌরঃ, জটাভিব্রহ্মচারী, বয়সা ষোড়শবর্ষদেশীয়ঃ, কম্বুকণ্ঠ
আয়তললাটঃ, সুবাহুঃ, বিশাললোচনঃ চ আসীৎ।

বটোঃ বাহিকঃ বর্ণনম্ আলোচ্যতাম্?

বটোঃ বাহিকঃ আকৃত্যা সুন্দরঃ বর্ণনগৌরঃ, জটাভিব্রহ্মচারী, বয়সা ষোড়শবর্ষদেশীয়ঃ, কম্বুকণ্ঠ
আয়তললাটঃ, সুবাহুঃ, বিশাললোচনঃ চ আসীৎ।

বটুর বাহিক বর্ণনা আলোচনা কর।

ব্রহ্মচারীবালক আকৃতিতে সুন্দর, গায়ের রঙ শ্বেতবর্ণ, জটাধারী ব্রহ্মচারী, বয়স ষোল বর্ষ পূর্ণ হয়নি
শঙ্খের মত সুন্দর গ্রীবা, দীর্ঘ ললাট, দীর্ঘবাহু এবং বিশাল লোচন যুক্ত ছিল।

শিবরাজবিজয়গদ্যকাব্যে সর্বপ্রথমে কস্য বর্ণনা উপলভ্যতে?

শিবরাজবিজয় গদ্যকাব্যে সর্বপ্রথমে প্রাতঃকালস্য বর্ণনা উপলভ্যতে।

শিবরাজবিজয়গদ্যকাব্যে সর্বপ্রথমে কস্য বর্ণনা উপলভ্যতে?

শিবরাজবিজয়গদ্যকাব্যে সর্বপ্রথমে প্রাতঃকালস্য বর্ণনা উপলভ্যতে।

শিবরাজবিজয়গদ্যকাব্যে সর্বপ্রথম কার বর্ণনা পাওয়া যায়?

শিবরাজবিজয়গদ্যকাব্যে সর্বপ্রথম প্রাতঃকালস্য বর্ণনা পাওয়া যায়।

'आकबरशाह' भारतवर्षे के छिलेन ?
भारतवर्षेरे यवनसम्राट छिलेन आकबरशाह ।

औरङ्गजेबः कः आसीत् ?

औरङ्गजेबः सम्राट आकबरस्य प्रपौत्रमासीत् ।

औरङ्गजेबः कः आसीत् ?

औरङ्गजेबः सम्राट आकबरस्य प्रपौत्रमासीत् ।

औरङ्गजेब के छिलेन ?

औरङ्गजेब सम्राट आकबररेरे प्रपौत्र छिलेन ।

औरङ्गजेबस्य उपाधिः किम् ?

'आलमगीरः' औरङ्गजेबस्य उपाधिम् ।

औरङ्गजेबस्य उपाधिः किम् ?

'आलमगीरः' औरङ्गजेबस्य उपाधिम् ।

औरङ्गजेबरेरे उपाधि की ?

'आलमगीर' औरङ्गजेबरेरे उपाधि ।

महाराष्ट्रस्य 'सिंहः' कः भवति ?

महाराष्ट्रस्य सिंहः औरङ्गजेबः भवति ।

महाराष्ट्रस्य 'सिंहः' कः भवति ?

महाराष्ट्रस्य सिंह औरङ्गजेबः भवति ।

महाराष्ट्रेरे सिंह के ?

औरङ्गजेब हलेन महाराष्ट्रेरे सिंह ।

यवनयुवकः कस्याः हस्तात् कीदृशीं ब्राह्मणकन्यां जहार ?

यवनयुवक तस्याः मातुः हस्तात् क्रन्दन्तीं ब्राह्मणकन्यां जहार । [अ. ल. उ. : मातुः हस्तात्, क्रन्दन्तीम्]

यवनयुवकः कं दृष्ट्वा ब्राह्मणकन्यां विहाय पलायितः ?

यवनयुवकः कालकम्बलम् इय कञ्चित् भल्लुकं दृष्ट्वा ब्राह्मणकन्यां विहाय पलायितः ।

[अ. ल. उ. : कञ्चित्भल्लुकं दृष्ट्वा पलायितः]

के ब्राह्मणकन्याम् आश्रमम् आनीतवन्तः ?

आश्रमशिष्याः ब्राह्मणकन्याम् आश्रमम् आनीतवन्तः ।

[अ. ल. उ. : आश्रमशिष्याः]

वीरविक्रमस्य काले भारतवर्षे किम् अभवत् ?

वीरविक्रमस्य काले मन्दिरे मन्दिरे जयध्वनिः, तीर्थे-तीर्थे घण्टानादः, मठे मठे वेदघोषश्च अभवत् ।

योगिराजः सर्वप्रथमं कस्य राज्ञः समये समाधिम् आकलितवान् ?

महाराजस्य युधिष्ठिरस्य राज्यकाले योगिराजः सर्वप्रथमं समाधिम् आकलितवान् ।

[अ. ल. उ. : युधिष्ठिरस्य राज्यकाले]

युधिष्ठिरस्य राज्यकाले समाधिम् आकलय्य योगिराजः कदा समाधे उत्थितः
वभूव ?

युधिष्ठिरस्य राज्यकाले समाधिम् आकलय्य योगिराजः वीरविक्रमस्य समये उत्थितः वभूव ।

[अ. ल. उ. : वीरविक्रमस्य समये]

विक्रमकाले समाधिम् आकलय्य योगिराजः कदा उत्थितः अभवत् ?

विक्रमकाले समाधिं गृहीत्वा योगिराजः यवनानां राज्यकाले उत्थितः अभवत् ।

[अ. ल. उ. : यवनानां राज्यकाले]

यवनानां राज्ये भारतवर्षे वेदानां किम् अभवत् ?

यवनानां राज्ये भारतवर्षे वेदानां विनाशनम् अभवत् ?

[अ. ल. उ. : विनाशनम्]

यवनानां राज्ये भारतवर्षे धर्मशास्त्रानां किम् अभवत् ?

यवनानां राज्ये भारतवर्षे धर्मशास्त्राणाम् अग्नौ प्रज्ज्वलनम् अभवत् । [अ. ल. उ. : अग्नौ प्रज्ज्वलनम्]

महामदः कतिवारं भारतवर्षम् अलुण्ठत?

महामदः द्वादशवारं भारतवर्षम् अलुण्ठत।

[अ. ल. उ. : द्वादशवारम्]

सोमनाथतीर्थं कस्मिन् प्रदेशे वर्तते?

सोमनाथतीर्थं गुर्जरप्रदेशे [गुजराटे] वर्तते।

[अ. ल. उ. : गुर्जरप्रदेशे]

कः सोमनाथमन्दिरम् अलुण्ठत?

महामदगजनी सोमनाथमन्दिरम् अलुण्ठत।

[अ. ल. उ. : महामदगजनी]

महामदगजनी सोमनाथमूर्तेः किम् अकरोत्?

महामदगजनी गदाप्रहारेण सोमनाथस्य मूर्तिम् अपि अतुकुटत्।

[अ. ल. उ. : गदाप्रहारेण अतुकुटत्]

महामदगजनी कस्मिन् काले प्राणान् अत्यजत?

महामदगजनी १०८७ वैक्रमाब्दे प्राणान् अत्यजत।

[अ. ल. उ. : १०८७ वैक्रमाब्दे]

शाहाबुद्दीनः कः आसीत्?

शाहाबुद्दीनः गोर [घोर] देशनिवासी आसीत्।

शाहाबुद्दीनः कदा दिल्लीम् अश्वयाम्बभूव?

शाहाबुद्दीनः १२५० वैक्रमाब्दे दिल्लीम् अश्वयाम्बभूव।

[अ. ल. उ. : १२५० वैक्रमाब्दे]

पृथ्वीराजः कुत्रत्यः राजा आसीत्?

पृथ्वीराजः दिल्लीश्वर आसीत्।

[अ. ल. उ. : दिल्लीश्वर]

जयचन्द्रः कुत्रत्यः राजा आसीत्?

जयचन्द्रः कान्यकुब्जेश्वरः [कनौजराजः] आसीत्।

[अ. ल. उ. : कनौजराजः]

कुतुबुद्दीनः कः आसीत्?

कुतुबुद्दीनः शाहाबुद्दीनस्य क्रीतदासः आसीत्।

‘অয়মেব কারণং ষষ্টামৃতুনাং, এষ এবাঙ্গীকরোতি উত্তরং দক্ষিণং চায়নং, এনেনৈব সম্পাদিতা যুগভেদাঃ, এনেনৈব কৃতাঃ কল্পভেদাঃ...’

[প্রথম নিদ্রাস, প্রথম অনুচ্ছেদ]

উদ্ধৃত সন্দর্ভটি মহাকবি অম্বিকাদত্তব্যাস রচিত ‘শিবরাজবিজয়ঃ’ নাম ঐতিহাসিক উপন্যাস থেকে

গৃহীত হয়েছে।

মারাঠাকেশরী শিবাজী মোঘল শাসকদের বিরুদ্ধে স্বাধীনতা সংগ্রাম শুরু করেছেন। যখন শাসকদের গতিবিধি সম্পর্কে অবহিত হওয়ার জন্য শিবাজী মহারাষ্ট্রে দু’ক্রোশ অন্তর অন্তর এক একটি আশ্রম স্থাপন করেছেন। ধর্মাচরণ ও শিষ্যশিক্ষাদানের অন্তরালে সেই আশ্রমগুলিতে মুসলমান শাসকদের সম্পর্কে সংবাদসংগ্রহ, স্বাধীনতা সংগ্রামী, সনাতন ধর্মরক্ষায় ব্রতী শিবাজীর অনুকূলে কার্যসম্পাদন ও সর্বতোভাবে দেশরক্ষায় ও দেশের স্বাধীনতা আনয়নে শিবাজীর নির্দেশপালনমূলক কর্ম সম্পন্ন হয়। পুণা নগরীর কাছাকাছি সেরকম একটি আশ্রমে আশ্রমবাসী গৌরব্রহ্মচারী নামক শিষ্য কর্তৃক বিবৃত প্রভাতকালীন সূর্য-কর্ণার মধ্যে উদ্ধৃত পংক্তিগুলি পাওয়া যায়।

আমাদের দেশে ছয়টি ঋতু আছে। ছয় ঋতুতে প্রকৃতির বিচিত্র ও স্বতন্ত্র রূপ পরিলক্ষিত হয়। সূর্যের উদয় ও অস্তের মধ্য দিয়ে দিন-রাত্রি নির্ধারিত হয়। দিন-রাত্রি মিলে হয় সপ্তাহ, সপ্তাহ পক্ষে, পক্ষ ক্রমে মাসে পরিণত হয়। দুটি মাস এক একটি ঋতুর স্থিতিকালরূপে গণ্য হয়। প্রতিটি ঋতুর পরিবেশ স্বতন্ত্র, তার পুষ্প-ফলসম্ভার স্বতন্ত্র এবং তাদের দিন-রাত্রের সৌন্দর্যও স্বতন্ত্র। এই সৌন্দর্য ও বৈচিত্র্য প্রকারান্তরে সূর্যসঞ্জাত। সূর্যের দুই দিকে গতির কারণে বছরে দুটি অয়ন [গতি বা গতিপথ] হয়; সূর্য উত্তরাভিমুখী হলে উত্তরায়ণ, দক্ষিণমুখী হলে সূর্যকিরণ দক্ষিণায়ণ। দুই অয়নে যেমন বর্ষা, উষ্ণতা, শীতলতা প্রভৃতি প্রাকৃতিক বিষয় সম্পন্ন হয়, তেমনই সনাতন ধর্মাবলম্বীদের নানা আধ্যাত্মিক কর্ম, যাগযজ্ঞাদি ও পূজা-পার্বণাদি অনুষ্ঠিত হয়। এ সমস্ত কিছুরই জনক সেই ভগবান ভাস্কর। এই সূর্যই সৃষ্টি করেন সত্য, ত্রেতা, দ্বাপর, কলির মতো যুগসমূহ। কারণ দ্বাদশমাসাত্মক বৎসরের পরিণতি হল যুগ। আবার সূর্যদেবই কল্পসমূহের স্রষ্টা। প্রজাপতি ব্রহ্মার এক অহোরাত্র হল কল্প। মানুষের ৪,৩২০,০০০,০০০ বছরে ব্রহ্মার একদিন হয়। বস্তুত মনুষ্যসভাতা সূর্য-নির্ভর। নিমেষ বা মূল্লর্ত থেকে শুরু করে কল্প, মন্বন্তর পর্যন্ত কাল-বিভাজনের মূলে যেমন সূর্য, তেমনই রোদ-বৃষ্টি-শস্য-বৃক্ষলতাগুল্ম ও মানুষের বেঁচে থাকার জন্য যা যা প্রয়োজন, তার প্রায় সবই সূর্যসম্ভূত। আমাদের প্রাচীন আর্চ্যগণ ছিলেন সূর্যোপাসক। ভারতবাসীর সূর্যের কাছে তাই বিনীত প্রার্থনা—‘দেবো বঃ সবিতা প্রাপয়তু শ্রেষ্ঠতমায় কর্মণে’—হে সূর্য! আমাদের শ্রেষ্ঠতম কর্মসম্পাদনের জন্য তুমি প্রেরণ কর।

पुण्यनगरस्य निकटे का नदी प्रवहति ?

पुण्यनगरस्य निकटे प्रवलप्रवाहा भीमा नदी प्रवहति।

[अ. ल. उ. : भीमा नदी]

विजयपुराधीशः क आसीत् ?

शास्तिखान् विजयपुराधीश आसीत्।

[अ. ल. उ. : शास्तिखान]

अफजलखान् कः आसीत् ?

अफजलखान् विजयपुराधीश्वरस्य अन्यतमः सेनानी आसीत्।

शिवीरेण सहयोद्धुम् आफजलखान् कुत्र निवसति स्म ?

शिवीरेण सह योद्धुम् आफजलखान् प्रतापदुर्गस्य सन्निकटे शिवीरे निवसति स्म।

[अ. ल. उ. : प्रतापदुर्गस्य सन्निकटे शिवीरे]

'प्रायो दुर्लभो युष्मादृक्षाणां साक्षात्कारः'—कं प्रति कस्य उक्तिरियम् ?

योगिराजं प्रति ब्रह्मचारिगुरो उक्तिः इयम्।

'संवृत्ते च निर्मक्षिके' —इत्यत्र 'निर्मक्षिके' इत्यस्य कः अर्थः ?

अत्र 'निर्मक्षिके' इत्यस्य अर्थ—जनशून्ये इति।

'अहमत्यन्तं तुष्यामि त्वयि'—कः कस्मिन् तुष्यति ?

ब्रह्मचारीगुरुः गौरसिंहे तुष्यति।

'कुलमेवेदृशं'—कस्य कुलम् ? 'ईदृशम्' इति कीदृशम् ?

गौरसिंहस्य कुलम्। 'ईदृशम्' इति शौर्ययुक्तम्।

कः कथं 'शान्तवीरसद्वयस्नातः' आसीत् ?

गौरसिंहः तपस्विवेषेण शान्तः कृपाणहस्तेन वीरः—इति रसद्वयेन स्नात आसीत्।

कन्यकापहरणकारिण यवनयुवकस्य वयः कीदृशम् आसीत् ?

कन्यकापहारी यवनयुवकः विंशतिवर्षकल्पः आसीत्।

औरङ्गजेवस्य क उपाधि आसीत्?

[अ. ल. उ. : आलमगीरः]

औरङ्गजेवस्य उपाधिः आसीत् आलमगीरः।

औरङ्गजेवः कस्मात् कारणात् दक्षिणदेशं हस्तयितुं न अशक्नोत्?

अरण्यसंकुलत्वात् पर्वतबहुलत्वाच्च औरङ्गजेवः दक्षिणदेशं हस्तयितुं न असक्नोत्।

शास्ति खान् [शायेस्ता खान] कः आसीत्?

शास्ति खान् औरङ्गजेवस्य आत्मीयः जनः आसीत्। [अ. ल. उ. : औरङ्गजेवस्य आत्मीयः जनः]

शिववीरः [शिवाजी] ससेनः कुत्र निवसति स्म?

ससेनः शिववीरः पुण्यनगरनेदीयसि सिंहदुर्गे निवसति स्म।

[अ. ल. उ. : सिंहदुर्गे]

शिववीरः क इव धृतावतारः आसीत्?

शिववीरः शिव इव धृतावतारः आसीत्।

[अ. ल. उ. : शिव इव]

शिववीरः महाराष्ट्रदेशस्य किम् आसीत्?

शिववीरः महाराष्ट्रदेशस्य रत्नम् आसीत्।

शिववीरस्य केन सह वैरम् आसीत्?

विजयपुराधीश्वरेण सह शिववीरस्य वैरम् आसीत्।

[अ. ल. उ. : विजयपुराधीश्वरेण]

शिववीरेण का प्रतिज्ञा कृता?

कार्यं वा साधयेयम्, देहं वा पातयेयम्-इति प्रतिज्ञा शिववीरेण कृता।

गौरसिंहः कुत्रत्यः क्षत्रियः आसीत्?

गौरसिंह राजपुत्र [राजपुताना] देशीय क्षत्रिय आसीत्।

[अ. ल. उ. : राजपुत्रदेशीयः]

गौरसिंहः आत्मानं कस्य गणम् अभिधत्ते?

गौरसिंहः आत्मानं शिवस्य गणम् अभिधत्ते।

[अ. ल. उ. : शिवस्य]

यवनानां राज्ये भारतवर्षे परदारानां परधनानां किम् अभवत्?

यवनानां राज्ये भारतवर्षे परदारानाम् अपहरणं परधनानां च लुण्ठनम् अभवत्।

कीदृशी आसीत् ब्राह्मणकन्या?

ब्राह्मणकन्या चन्द्रकलया इव निर्मिता, नवनीतेन इव रचिता, मृणालगौरी कुन्दकोरकाग्रदती च आसीत्।

ब्राह्मणकन्या का इव केन आघाता आसीत्?

ब्राह्मणकन्या मृगी इव व्याघ्रेण आघाता आसीत्।

भल्लुकं दृष्ट्वा ब्राह्मणकन्यकापहारी यवनयुवकः किम् अकरोत्?

भल्लुकं दृष्ट्वा ब्राह्मणकन्यकापहारी यवनयुवकः एकं शाल्मलितरुम् आरुरोह।

[अ. ल. उ. : शाल्मलितरुम् आरूढ]

पर्वतीयान् शकान् विजितवान्?

विक्रमादित्यः पर्वतीयान् शकान् विजितवान्।

[अ. ल. उ. : विक्रमादि]

कानि तावत् दश इन्द्रियाणि?

चक्षु-कर्ण-नासिका-जिह्वा-त्वक्—इति पञ्च ज्ञानेन्द्रियाणि वाक्-पाणि-पाद-पायु-उपस्थ इति पञ्च कर्मेन्द्रियाणि वा दश इन्द्रियाणि भवन्ति।

कः समुद्रान् मरुकरोति?

कालः समुद्रान् मरुकरोति।

कः अरण्यानि जनपदीकरोति?

कालः अरण्यानि जनपदीकरोति।

कः नगराणि काननीकरोति?

कालः नगराणि काननीकरोति।

महामदः [मामुदः] कस्य देशस्य निवासी आसीत्?

महामदः गजनीदेशस्य निवासी आसीत्।

[अ. ल. उ. : गजनी]

जनाः समाधिस्थं महामुनिं कैः नामभिः जानन्ति?

जनाः समाधिस्थं महामुनिं कपिल-लोमश-जैगीषव्य-मार्कण्डेय इत्यादिभिः नामभिः जानन्ति।

[अ. ल. उ. : कपिल इति लोमश इति, जैगीषव्य इति मार्कण्डेय च इति]

कौ प्रथमं महामुनिं दृष्टवन्तौ?

गौरवदुश्यामवदुश्च प्रथमं महामुनिं दृष्टवान्।

[अ. ल. उ. : गौर-श्यामवदू]

महामुनेः विषये वदू किम् अपश्यताम्?

महामुनिः वदुभ्यां पर्वतशिखराद् अवतरन् अदर्शि।

शिखराद् अवतीर्य योगिराजः कुत्रागमत्?

शिखराद् अवतीर्य योगिराजः आश्रमम् अगमत्।

[अ. ल. उ. : आश्रमम्]

समाधेः उत्थितस्य योगिराजस्य शरीरं कीदृशम् आसीत्?

समाधे उत्थितस्य योगिराजस्य शरीरं सुघटितम् आसीत्।

[अ. ल. उ. : सुघटितम्]

योगिराजस्य जटा कीदृशी आसीत्?

योगिराजस्य जटा सान्द्रा आसीत्।

[अ. ल. उ. : सान्द्रा]

योगिराजस्य अङ्गानि कीदृशानि आसन्?

योगिराजस्य अङ्गानि विशालानि आसन्।

[अ. ल. उ. : विशालानि]

योगिराजस्य नयने कीदृशी आसीत्?

योगीराजस्य नयने अङ्गारप्रतिमे आस्ताम्।

[अ. ल. उ. : अङ्गारप्रतिमे]

योगिराजस्य वाणी कीदृशी आसीत्?

योगिराजस्य वाणी गम्भीरा मधुरा च आसीत्।

বিষয়বস্তু

শিবরাজবিজয়-এর কাহিনী ঐতিহাসিক। এতে মহারাষ্ট্রকেশরী বীর শিবাজীর জীবনচরিত বিবৃত হয়েছে। শিবাজীর মা ছিলেন জীজাবাই, আর বাবা শাহজী ভৌসলে। ১৬২৭ খৃষ্টাব্দের এপ্রিল মাসের কুড়ি তারিখে শিবনৌর দুর্গে শিবাজীর জন্ম হয়। শিবাজী অত্যন্ত মাতৃভক্ত ছিলেন। গুরু কোঙ্কণদেবের কাছ থেকে তিনি হিন্দুদের জীবনযাপনপদ্ধতি ও রাষ্ট্রভক্তির শিক্ষা গ্রহণ করেছিলেন। আজীবন শিবাজী দিল্লীর মোগলসম্রাটদের বিরুদ্ধে সংগ্রাম করে গেছেন এবং আজীবন স্বপ্ন দেখেছেন খন্ড, ছিন্ন, বিক্ষিপ্ত ভারতকে 'একধর্মরাজ্যপাশে' বেঁধে দেওয়ার। শিবাজী ছিলেন দেশপ্রেম ও স্বাভাবিক চেতনার মূর্তিমান বিগ্রহ। একে একে মোগলদের অধিকার থেকে মহারাষ্ট্রের নানা দুর্গ মুক্ত করে, জাবলী, কোঙ্কণ প্রভৃতি নগর জয় করে, আফজল খাঁ প্রমুখ মোগলসম্রাটের বিশ্বস্ত, বীর সেনাপতিদের নিহত ও পরাজিত করে তিনি শক্তিশালী, দৌর্দমপ্রতাপ মোগলদের কাছে মূর্তিমান বিতীর্ণিকা হয়ে উঠেছিলেন। এইসব কারণে দেশানুরাগী, সংস্কৃতিমনস্ক স্বাধীনতাকামী ভারতবাসী শিবাজীকে ভারতবর্ষের রাষ্ট্রপ্রতিনিধিরূপে বরণ করে থাকেন। কবি অম্বিকানন্দ ব্যাস তাঁর গ্রন্থেও ভারতবর্ষের এই মহান সন্তানকে জনমানসের প্রতিনিধিরূপে চিত্রিত করেছেন।

শিবরাজবিজয়গ্রন্থের কাহিনী ইতিহাস-আধারিত। মোগলশাসনের অবসান সংঘটনে তৎপর মারাঠা-বীর শিবাজীর পুণ্য চরিতগাথাবর্ণনই এই গ্রন্থের মুখ্য প্রতিপাদ্য বিষয়। গ্রন্থে তিনটি বিরাম আছে। প্রতি বিরামে চারটি করে নিঃশ্বাস আছে। অতএব তিনটি বিরামে মোট বারোটি নিঃশ্বাসে শিবাজীর চরিত্র শিবরাজবিজয়গ্রন্থে চিত্রিত হয়েছে। ভারতবর্ষের সনাতন ঐতিহ্য ও ধ্যান-ধারণার পতন ও অবক্ষয়, যব তথা মুসলমান শাসকদের দুরাচার-অত্যাচার-উৎপীড়ন, ভারতবাসীর ধরিত্রীসুলভ সহিষ্ণুতা, শিবাজীর অনমনীয় মনোভাব, শৌর্য ও রণকৌশল —এ সবই অসাধারণ কুশলতায় চিত্রিত হয়েছে; যেন চলচ্চিত্রের মতো পাঠকের মনের পর্দায় একের পর এক ছবি ফুটে উঠেছে।